RNI/MPHIN/2013/61414

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC Care Listed

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal
Impact Factor - 6.253

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

नवम वर्ष, षष्ठ अंक जनवरी–फरवरी 2021

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

₹ 30

दो गज की दूरी - मास्क है जरूरी

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ग्रह जनित रोग एवं निवारण	डॉ. बह्मानन्द मिश्रा	03
2.	योग और समग्र स्वास्थ्य	डॉ. साधना दौनेरिया	08
3.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर ऑनलाइन....	डॉ. पल्लवी पाण्डे, डॉ. राकेश साहू	12
4.	भगवान् विष्णु के अवतारों का एक विश्लेषण	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	16
5.	मीमांसा परम्परा में 'विध्यर्थ'	डॉ. नीरजा कुमारी	25
6.	'राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020' में भारतीय भाषाओं के उन्नयन हेतु प्रावधान	डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार	28
7.	प्रतीकोपासना विमर्श	डॉ. मेघराज मीणा	32
8.	राष्ट्रीयता की भावना के विकास में हिन्दी साहित्य का योगदान	डॉ. संजय कुमार	37
9.	विभिन्न देशों में हिन्दी साहित्यकार और उनका साहित्य	डॉ. सुरेश कुमार बैरागी	43
10.	भाषा द्वारा मानव-विकास के उच्चतम आयाम-मोक्ष की प्राप्ति	डॉ. ममता स्नेही	47
11.	वर्तमान समाज की चुनौतियाँ एवं महर्षि पतंजलिकृत योगसूत्र	डॉ. मलिक राजेन्द्र प्रताप	51
12.	पर्यावरण समस्या और हमारा नैतिक दायित्व	डॉ. हरेती लाल मीना	54
13.	कविकुलगुरु कालिदास की सारस्वतश्री:का मकरन्द.....	डॉ. कृपाशंकर शर्मा	57
14.	आधुनिक जीवन में क्रियायोग का महत्व	आरती चौधरी	61
15.	श्रीगुरुग्रन्थसाहिब में संस्कृतमूलक शब्दों का प्रयोग	डॉ. दलबीर सिंह चाहल	64
16.	वैदिक प्रार्थनायें : आर्यावर्त के मानवीय-जीवन-प्रबन्धन के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. सलोनी	67
17.	भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था	यशोदा सिंह	70
18.	समसमायिक परिप्रेक्ष्य में कौटिलीय अर्थशास्त्र की समीचीनता	डॉ. सुमन कुमारी	74
19.	भारतीय चिन्तन परम्परा में ज्ञान का स्वरूप	प्रवीण कुमार	77
20.	पृथिवीसूक्त में प्रतिपादित पृथिवी - संरक्षण एवं प्रार्थनाएँ	डॉ. सुशीला कुमारी	81
21.	बालमुकुंद गुप्त की हिन्दी पत्रकारिता	डॉ. अमित कुमार पाण्डेय, डॉ. संजय कुमार	86
22.	न्याय-वैशेषिकदर्शन में समाधि विचार विवेचन	किशोर कुमार	89
23.	भारतीय शास्त्रपरम्परा और पशुपालन	प्रो.नीरज शर्मा	92
24.	कालिदास का प्रजा संरक्षण एवं प्रकृति प्रेम	डॉ. मोहिनी अरोरा	96
25.	भीष्मस्तवराज वैदिक एकेश्वरवाद का प्रबल समर्थक	डॉ. गटुलाल पाटीदार, मनोहर लाल सुथार	100
26.	कोविड-19 के पश्चात् भविष्यगामी योजनाएं एवं कौशल विकास	डॉ. अर्चना चौहान	105
27.	'छल' पदार्थ विवेचन	विद्याप्रकाश सिंह	108
28.	प्राचीन व मध्यकाल की शिक्षा पर ज्योतिष का प्रभाव	डॉ. मंजू सिंह	111
29.	योग का पर्यावरण से सम्बन्ध एक विवेचनात्मक अध्ययन	डॉ रजनी नौटियाल	113
30.	रचनात्मक आकलन का स्वरूप	डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय	116
31.	मूल्याङ्कन के सन्दर्भ में कक्षा शिक्षण की समीक्षा	डॉ. करुणाकर मिश्र	118
32.	वैशेषिकसूत्रोपस्कार के सन्दर्भ में 'आत्मवाद' की समीक्षा	ओम प्रकाश झा	122
33.	सट्टक परम्परा में कर्पूरमंजरी का महत्व	वरुण मिश्र	127
34.	वास्तुकला में द्वार निर्णय का शास्त्रीय स्वरूप	सीताकान्त कर	129
35.	महर्षि दयानन्द का शिक्षा दर्शन	अदिति	133
36.	'उत्तररामचरिते भवभूतिविशिष्यते' उक्ति की समीक्षा	नीतू	136
37.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं स्व-नियंत्रण....	प्रदीप सिंह थापली, डॉ. विभा लक्ष्मी	139
38.	शांखायण-ब्राह्मण में दर्शपौर्णमास-यज्ञ	कृष्णकान्त सरकार	145
39.	वर्तमान सन्दर्भ में ज्योतिष की उपयोगिता	नंदिनी चौबे	149
40.	प्राकृतिक आपदा एवं ज्योतिषशास्त्र	तपति तपन्विता महापात्र	151
41.	आचार्य अभिराजराजेंद्र मिश्र प्रणीत प्रशान्तराघव नाटक में.....	घनश्याम मीणा	153
42.	श्रीहनुमच्चरित्रवाटिका महाकाव्य में प्रकृति चित्रण और पर्यावरण शिक्षा	दयाशङ्कर शर्मा	155

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed
Impact Factor - 6.253

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

रोहित पचौरी

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैन्नै

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
Smt P V N B Srilakshmi
on behalf of
Bharatiya jyotisham
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - ROHIT PACHORI*

ISSN 2278 - 0327

पर्यावरण समस्या और हमारा नैतिक दायित्व

डॉ. हरेती लाल मीना
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
करोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांश– आज के दौर में मानव विकास की दौड़ में इतना आगे बढ़ गया है कि उसे अपने पर्यावरण की ओर देखने का समय नहीं है। वह यह भूलता जा रहा है कि उसे पृथ्वी पर रहना है। विश्व में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह बच्चा हो या वृद्ध अपने पर्यावरण के प्रति सजगता, जागरूकता, चेतना और पर्यावरण अनुकूलन को विकसित करने की आवश्यकता है और तभी इस गंभीर समस्या का समाधान किया जा सकता है। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की भी है की मनुष्यों द्वारा पर्यावरण के साथ समन्वयात्मक, सहयोगात्मकता और सामंजस्य पूर्ण सम्बन्ध को अपनाया जाये। पर्यावरण को केंद्र बिंदु बनाकर राष्ट्रीय स्तर पर विकास कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए। इन सबका ईमानदारीपूर्वक प्रयास आज से ही किया जाये, तब जाकर कहीं 20 –30 वर्षों के पश्चात् ग्लोबल वार्मिंग के कहर से बचा जा सकेगा, वरना आने वाले दिनों में बहुत जल्दी पेट्रोल पंप और गैस रेफिलींग केन्द्रों की तरह मानव को शुद्ध प्राणवायु के लिए जगह–जगह पर बने ऑक्सीजन बूथों पर जाना होगा।

आज आवश्यकता है कि बेटी और बेटे के जन्मदिवस को वृक्षारोपण से जोड़ने की शासकीय पहल होनी चाहिए। बेटी के पैदा होने पर पांच इमारती वृक्ष यथा–सागौन, शीशम, साल आदि का वृक्षारोपण खुद की जमीन में अथवा वृक्षारोपण हेतु संरक्षित शासकीय जमीन में कर उसकी देखभाल पालक की ओर से हो लड़की के विवाह योग्य होने पर 20 वर्षों के उक्त इमारती वृक्ष को शासन–अधीन कर देने पर कन्या के विवाह के लिए शासन की ओर से 2 लाख रूपए देय हों। बेटे के जन्म पर पांच फलदार पौधे लगाए जाने चाहिए। इसके लिए शासकीय नौकरी के समय साक्षात्कार में पांच अंक उसे बोनस के रूप में दिए जाने की व्यवस्था हो।

कूट शब्द –

पर्यावरण, प्रकृति, वृक्षारोपण, ग्लोबल वार्मिंग, कार्बन, डाइऑकसाईड, ऑक्सीजन, औद्योगीकरण।

विषय–प्रवेश – मानवीय जीवन के आरम्भ से ही मनुष्य एवं पर्यावरण में आपसी संबंध बना हुआ है। मनुष्य का जीवन प्रकृति पर निर्भर करता है। अत: उसके अस्तित्व के लिये प्राकृतिक परिवेश अनिवार्य है। भारतीय संस्कृति में 'पृथ्वी' को माँ कहा गया है। *'माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या'*[1] अर्थात् पृथ्वी हमारी माँ है और हम पृथ्वी के पुत्र हैं। चूँकि पृथ्वी माता रूप में संपूर्ण ब्रह्मांड के जीवों का पालन पोषण करती है। अत: इसका संरक्षण करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। भारतीय समाज आदिकाल से पर्यावरण संरक्षक की भूमिका निभाता रहा है। हमने प्रकृति प्रेम को सर्वोपरि रखा इसका कारण यह है कि हमारे वेदों, उपनिषदों, पुराणों एवं धार्मिक ग्रंथों में पेड़–पौधों एवं अन्य जीव–जंतुओं के सामाजिक महत्त्व को बताते हुए उनको पारिस्थितिकी से जोड़ा जाता है। प्राचीन युग में विभिन्न दार्शनिकों, शासकों और राजनेताओं ने प्रकृति के प्रति जागरूकता दिखाई है। प्राचीन युग के विद्वान् कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में वन संरक्षण का उल्लेख किया है तथा पशुओं के शिकार के संबंध में अनेकों जटिल नियम प्रस्तुत किए हैं। अधुनातन परिभाषा के अनुसार चाणक्य भारत के प्रथम वन एवं वन्य जीव संरक्षक थे।[2] पर्यावरण संरक्षण के लिये वैदिक युग में नदियों के देवत्व वाला स्वरूप उभरकर हमारे समक्ष उपस्थि हुआ था। नदी सूक्त में कहा गया है–

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।[3]

हे गंगा, हे यमुना, आदि नदियों तुम मेरे स्रोत सुनो! गंगा के प्रति विशेष आदर अवश्य रहा, किंतु एक समय था, जब स्वयं गंगा नदी शब्द नदी मात्र का द्योतक था– सभी नदियाँ गंगा थी। नदी मात्र के प्रति जो आत्मीयता थी वह आज भी सुरक्षित है। यही कारण है कि आज वर्तमान सरकार ने गंगा नदी को माँ माना है और उसे प्रदूषण से रहित करने के लिये पूरे देश में राष्ट्रीय स्तर पर मुहिम चला रही है। अत: यही कहा जा सकता है कि पर्यावरण के संरक्षण के लिये न केवल वर्तमान में बल्कि प्राचीन